रिकॉर्ड:- आखिर वो दिन आया है.... ओम शान्ती प्रातःक्लास 11-3-07

बच्चे यह जानते है ओम शान्ती माना ही अहम् आत्मा। मम शरीर। आत्मा है अविनाशी। शरीर है विनाशी। आत्मा को ही शरीर लेकर पार्ट बजाना है। क्यों कि यह ड्रामा है नां। अभी तो इस ड्रामा को, सृष्टी चक्र को और इस सृष्टी चक्र को जानने वाले को तुम जानते हो क्यों कि जानने वाले को रचता ही कहेंगे। रचता और रचना को और कोई भी नही जानते है। भल पढ़े लिखे हुये बड़े-2 विदवान पण्डित है। आते है यहां। उनको अपना ही घमंड तो रहती ही है नां। परन्तु उनको यह पता नही है। गाते भी है ज्ञान भी भक्ति और वैराग। इसको भी यथ नही जानते है। सन्यासियों को वैराग आता ही है घर से। हट ऐंड होम छोड़ते है नां। गवर्मेन्ट को भी कहते है कि हम साधु समाज है। उनके मठ पंथ होते है। साधुओं मे भी भिन्न-2 केटीगरी है। उनको भी ऊंच और नीच की बहुत ईर्ष्या रहती है। यह ऊंच कुल का है यह मध्यम कुल का है। इस बात पर उनका बहुत चलता है। कुम्भ के मेले मे भी उनका बहुत झगड़ा हो जाता है कि पहले-2 किसकी सवारी निकले। इसी बात पर बहुत लड़े थे फिर गवर्मेन्ट की पुलिस ने आकर छुड़ाया। यह भी देह अभिमान हुआ नां। दुनियां मे जो भी मनुष्य मात्र है वो है देहअभिमानी। तुम को तो अभी देही अभिमानी बनना है। बाप कहते है कि देह अभिमान छोड़ कर अपने को आत्मा समझो। आत्मा ही पतित बनी है। उसमे खाद पड़ी है। आत्मा ही सतोप्रधान रजो प्रधान बनती है। जैसी आत्मा वैसा ही शरीर मिलता है। आत्मा सतोप्रधान तो शरीर भी सतोप्रधान ही मिलता है। कृष्ण की आत्मा सुन्दर है तो शरीर भी बहुत सुन्दर मिलता है। इनके शरीर मे बहुत कशिश होती है। पवित्रात्मा ही कशिश करती है नां। लक्ष्मी-नारायण की इतनी महिमा नही है जितनी कि कृष्ण की है। क्यों कि कृष्ण तो पवित्र छोटा बच्चा है नां। यहां फिर कहते है कि छोटा बच्चा और महात्मा एक समान है। महात्मा तो फिर भी जीवन का अनुभव करके फिर विकारों को छोड़ते है। घृणा आती है नां। मगर बच्चा तो है ही पवित्र। उनको ऊंच महात्मा समझते है। वो तो बाप ने समझाया है यह निवृती मार्ग वाले सन्यासी भी कुछ थमाते है जैसे मकान आधा पुराना होता है तो फिर मुरम्मत की जाती है। सन्यासी भी मरम्मत करते है। पवित्र रहने से भारत थमा रहता है। भारत जैसा पवित्र खण्ड और इस जैसा धनवान खण्ड कोई और हो नही सकता है। अब बाप तुमको रचता और रचना की आद मध्य अन्त का राज समझाते है। क्यों कि यह बाप भी है। टीचर भी है तो गुरू भी है। गीता मे तो कृष्ण भगवानोवाच लिख दिया है। इनको कब बाबा कहेंगे क्या? अथवा पतित पावन कहेंगे क्या। जब मनुष्य पतित पावन कहते है तो कृष्ण को याद नही करते है। वो तो भगवान को ही याद करते है। फिर भी कह देते है पतित पावन सीताराम रघुपति राघव राजा राम.... कितना मीठा है। शास्त्रों के अक्षरों मे कितना अनर्थ है। बाप कहते है मै तुम बच्चों को आकर सभी वेदों शास्त्रों का सार सुनाता हूं यथार्थ रीती से। पहले-2 मुख्य बात समझाते है कि तुम अपने को आत्मा समझो। और बाप को याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। तुम हो भाई-2, ब्रह्मा की सन्तान कुमार-कुमारियां तो फिर भाई बहन हो गये नां। यह बुधी मे याद रहे। असल मे आत्मायें भाई-2 है। फिर यहां शरीर मे आने पर भाई बहन बनते हो। एक तरफ तो कहते भी है ब्रदरहुड। फिर सर्वव्यापी कहने से फादर हुड हो जाता है। इतनी भी बुधी समझने की नही है। वो हम आत्माओं का बाप है तो हम ब्रदर्स ठहरे नां। फिर भी सर्वव्यापी कैसे कहते है? वर्सा तो बच्चे को ही मिलेगा नां। फादर को तो नही मिलेगा नां। बाप से बच्चे को वर्सा मिलता है। ब्रह्मा भी शिव बाबा का बच्चा है नां। इनको भी वर्सा उनसे मिलता है। तुम हो जाते हो पोत्रे-पोत्रियां। तुमको भी हक है। तुम आत्मा के रूप मे सब बच्चे हो। फिर शरीर मे आते हो तो भाई-बहन कहते हो। और कोई नाता नही है। मेल-फीमेल दोनो ही कहते भी है कि :- ओ गाड फादर। तो भाई बहन हुये नां। भाई बहन होते ही है तब जब कि बाप सृष्टि पर आकर रचना रचते है। स्त्री पुरूष की नजर बहुत मुश्किल से निकलती है। इस लिये ही स्त्री को

देखने से ही गिर पड़ते है। बाप कहते है कि तुमको देही अभिमानी बनना है। बाप के बच्चे बनेंगे तब ही वर्सा मिलेगा। मामेकम् याद करो तो सतोप्रधान बनेंगे। सतोप्रधान बने बिना तुम वापस मुक्ति जीवन मुक्ति में जा नही सकेंगे। यह युक्ति सन्यासी आद कब नही बतावेंगे। वो ऐसे कब कहेंगे नही कि अपने को आत्मा समझ कर बाप को याद करो। बाप को कहा जाता है परमपिता परमात्मा। सुप्रीम। आत्मा तो सबको भी कहा जाता है ना। परन्तु उनको परम-आत्मा कहा जाता है। वो बाप कहते है बच्चो मै आया हुआ हूं तुम बच्चों के पास। हमको मुख तो चाहिये ना बोलने लिये। आजकल देखो जहां तहां गऊ मुख जरूर रखते है। फिर कहते है गऊ मुख से अमृत निकलता है। वास्तव में अमृत तो कहा ही जाता है ज्ञान को। ज्ञानामृत मुख से ही निकलता है। पानी की तो इसमे बात ही नही है। यह गऊ ~~मुख~~ माता=भी है। बाबा इनमें प्रवेश हुआ है। बाप ने इन द्वारा तुमको अपना बनाया है। इसमें से ज्ञान निकलता है उन्होंने तो पत्थर का बना कर उसमें मुख बना कर दिखाया है कि पानी निकलता है। वो तो भक्ति, झूठ हो गया ना। यथार्थ बातें तो तुम्ही जानते हो। भीष्म पितामह आद को तुम कुमारियों ने ही ज्ञान बाण मारे है। तुम हो ब्रह्मा कु, कु,। तो कुमारियां किसी की तो होगी ही ना। अधर कुमार और कुमारी दोनो के मन्दिर है। प्रैक्टीकल में तुम्हारा यादगार मन्दिर है ना। अब बाप बैठ समझाते है कि तुम जब कि ब्र, कु, कु हो तो क्रिमनल ऐसाल्ट हो नही सकता। नही तो बहुत कड़ी सजा हो जावेगी। देह अभिमान में आने से वो भूल जाता है कि हम तो भाई-बहन है। यह भी ब्रह्माकुमार, मै भी ब्रह्मा कु, तो विकार की दृष्टी जा नही सकती। कई ऐसी भी पूतनायें सरूपनखायें निकल आती है। महाभारत की लड़ाई के समय में ही पूतनायें सरूपनखायें आद गाई हुई है। तो इस समय पूतनायें, सरूपनखायें अकासुर, बकासुर आद सभी है। यह सब नाम तो आसुरी सम्प्रदाय के है विकार बिना रह नही सकते है तो विघ्न डालते है। अब तुम ब्र, कु, कु को वर्सा मिलता है बाप से। बाप की श्रीमत पर ही चलना है। पवित्र बनना है। यह है इस विकारी मृत्यु लोक का अन्तिम जन्म। यह भी कोई जानते नही है। अमरलोक मे विकार की कोई बात होती ही नही है। इनको कहा ही जाता है सतोप्रधान सम्पूर्ण निर्विकारी। यहां है तमोप्रधान। सम्पूर्ण विकारी। गाते भी है कि वो सम्पूर्ण निरविकारी, हम तो विकारी पापी है। सम्पूर्ण निरविकारी की पूजा करते है। बाप ने समझाया है तुम भारतवासी ही पूज्य थे फिर पुजारी बनते हो। पहले सूर्यवंशी फिर चन्द्रवंशी फिर आधा कल्प के बाद होता है रावण का राज्य। इस समय भक्ति का बहुत प्रभाव है। भक्त भगवान को याद करते है। आकर भक्ति का फल दो। भक्ति में क्या हाल हो गया है। भक्ति से दुर्गती हो गई है। इनसे निकलने में कितनी मेहनत करनी पड़ती है। निकलते ही नही है। गीता में भी भगवान कृष्ण का नाम डाल कर झूठी बना दी है। तुम कहते हो गीता शिव बाबा ने सुनाई है। वास्तव में मुख्य तो है ही गीता। बाप ने समझाया है कि धर्म शास्त्र भी चार है। एक तो है डीटीजम। इसमें ब्राह्मण देवता क्षत्री तीनों ही आ जाते है। बाप ब्राह्मण धर्म स्थापन करते है। ब्राह्मणों की चोटी है संगम युग पे। तुम ब्राह्मण अभी पुरुषोत्तम बन रहे हो। ब्राह्मण ही फिर देवता बनते है। वो ब्राह्मण भी है विकारी। वो भी इन ब्राह्मणों के आगे नमस्ते करते है। ब्राह्मण देवी देवतायें नमः कहते है। क्यों कि समझते है कि वो ब्रह्मा की सन्तान थे। हम तो ब्रह्मा की सन्तान नही है। अब तुम ब्रह्मा की सन्तान हो। तुमको सब नमः करेंगे। तुम फिर देवी देवता बनते हो। अब तुम ब्र, कु, कु बन रहे हो। फिर बनोगे देवी कुमार कुमारियां। यह तुम्हारा अमूल्य जीवन है। इस समय तुम जगत की मातायें गाई जाती है। तुम हद से निकल कर बेहद में आई हो। तुम जानते हो हम ही इस जगत का कल्याण करने वाले है। तो हर एक जगत अम्बा जगतपिता ठहरे। इस नर्क में मनुष्य बहुत दुःखी है। हम उनकी रूहानी सेवा करने आये है। हम उनको स्वर्गवासी बना कर ही छोड़ेंगे। तुम हो सेना। इसको युद्धस्थल भी कहते है। यादव कौरव

पाण्डव भी है। यौरप वासियों को यादव, भारतवासियों को कौरव कहा जाता है। कौरव पाण्डव, इकठे रहते है। भाई-2 है नाे। अब तुम्हारी युध भाई-बहनों से नहीं है। तुम्हारी युध है ही रावण से। भाई बहिनों को तो तुम उठाते हो मनुष्य से देवता बनाने के लिये। तो बाप समझाते है देह सहित सभी देह के सम्बन्ध छोड़ते है। यह है पुरानी दुनियां। कितने बड़े-2 ~~डेमस~~ डेम्स बैराज आद बनाते है क्यों कि पानी नहीं है। प्रजा बहुत बढ़ गई है। वहां तुम तो रहते ही बहुत थोड़े हो। नदियों में पानी भी ढेर अनाज भी ढेर रहता है। यहां इस धरती पर है 500 करोड़ मनुष्य। वहां सारी धरती पर ही शुरू में होते है 9, 10 लाख। और कोई खण्ड होता ही नहीं है। तुम थोड़े ही रहते हो। तुमको कहीं जाने करने की भी दरकार नहीं है। वहां तो सदैव है ही बहारीमौसम। पांच तत्व भी कहीं तकलीफ नहीं देते है। ऑडर में रहते है। दुःख का तो नाम ही नहीं। वहां है ही वसन्त। फिर जब देवतायें वाम मार्ग में गिरते है तो फिर रावण का राज्य शुरू हो जाता है। देवताओं को कहा ही जाता है सर्वगुण सम्पन्न..... इस समय है ही आसुरी सम्प्रदाय। बाप कहते है बिलकुल ही रैप बुधी बन गये है। ऐसे रैप्स के ऊपर नाम फिर रख दिया है श्री फलाना। मुसलमानों को भी श्री का टाईटल तो क्रिश्चनस को भी श्री का टाईटल दे दिया है। कब श्री तो कब फिर मिस्टर लगा देते है। श्री भूल जाता है। क्यों कि श्री नहीं तो मिस्टर ही कह देते है। मिस्टर अक्षर भी अंग्रेजी का है। अब तो अक्सर ही दास वा मल नाम रख देते है। दास है देवताओं के पुजारी। आजकल तो कइयों पर भी श्री का ताज रख दिया है। श्री तो यह लग्न है नां। तुम समझ गये हो हम डबल ताज धारी सिरताज बनते है फिर सिंगल ताज वाले बनते है। सतयुग में पवित्रता की यह निशानी है। देवतायें तो सच्चे-2 पवित्र है। यहां पवित्र कोई है ही नहीं। जन्म तो फिर भी भ्रष्टाचार से ही लेते है नां। इसीलिये ही इसको भ्रष्टाचारी दुनियां कहा जाता है। सतयुग है श्रेष्टाचारी। विकारी को ही भ्रष्टाचारी कहा जाता है। बच्चे जानते है कि सतयुग में पवित्र प्रवृती मार्ग था। अब अपवित्र होगया है। अब फिर पवित्र श्रेष्टाचारी दुनियां बननी है। सृष्टी का चक्र फिरता है नां। परमपिता परमात्मा को ही पतित पावन कहा जाता है। वो भी कहते है कि हमको शरीर का आधार लेना पड़ता है। शरीर बिना मुख से सिक्षा ही कैसे दूं? प्रेरणा से कोई सिक्षा नहीं दी जाती है। प्रेरणा माना ही विचार। और कोई बात नहीं। भगवान प्रेरणा से कुछ नहीं करते है। बाप तो बच्चों को पढ़ाते है। प्रेरणा से पढ़ाई थोड़ेई हो सकती है। सिवाय बाप के सृष्टी की आद मध्य अन्त का राज़ कोई समझा नहीं सकते है। बाप को ही नहीं जानते है। कोई कहते लिंग है। कोई कहते है अखण्ड ज्योति है। कोई कहते है ब्रह्म ही ईश्वर है। तत्व ज्ञानी ब्रह्म ज्ञानी है नां। शास्त्रों में तो बहुत गपौड़े लगा दिये है। 84 लाख जन्म अगर होते तो तो कल्प की आयु बहुत लम्बी चाहिये। कोई हिसाब ही निकल नहीं सकता है। वो तो सिर्फ सतयुग को ही लाखों वर्ष कह देते है। बाप कहते है सारी सृष्टी का चक्र है 5000 वर्ष का है। 84 लाख जन्मों के लिये समय भी तो उतना ही चाहिये नां। यह शास्त्र आद सब है भक्ति मार्ग के लिये। कितने ग गपोड़े है। बाप कहते है मै आकर तुमको इन सब शास्त्रों का सार सुनाता हूं। यह सब भक्ति मार्ग की सामीग्री है। इनसे कोई भी मेरे को प्राप्त नहीं कर सकते है। मै जब आता हूं तब ही सबको ले जाता हूं। मुझे तो बुलाते भी है हे पतित पावन आओ। पावन बना कर हमको पावन दुनियां में ले जाओ। फिर भी धक्के क्यों खाते हो ढूंढ़ने के लिये। कितना दूर-2 पहाडों आद पर जाते है। आजकल तो कितने ही मन्दिर यूं ही खाली पड़े है। कोई भी जाता नहीं है। अब तुम बच्चे ऊंच ते ऊंच बाप की बायोग्राफी को भी जान गये हो। बाप बच्चों को सबकुछ देकर फिर 60 वर्ष बाद वानप्रस्थ में बैठ जाते है। यह रस्म भी अभी की ही है। त्यौहार भी सभी इसी समय के ही है। तुम जानते हो कि अब हम संगम पर खड़े है। रात के बाद फिर दिन होगा। अब तो घोर अंधेरा है। कोई में भी बुधी नजरनहीं जानी है तुम्हारी। ओम